

हॉथ जोड़कर मैं हूँ, सुनिये कौशल नाथ  
 राखिये आशीर्वाद का भरो सब पर हॉथ  
 जिस जन पे रूपा आप की हो, वह जाकर लड़े रसाल लठ  
 निभिय है, उसको रवौफ नहीं, उरयाचलसे अस्ताचल तक  
 फिर लंका वाले तो क्या हैं, वह कौन जो उसको पडर पाये  
 इकवासे आपका ऐसा है। पानी में पत्थर तैराये  
 जन से हो कार्य जगदीश का, हो इससे बढ़कर मान नहीं  
 सुवराज अपना दूत को, तो कुछ धरती है शान नहीं  
 यह सब पीछे जाहिर होगा, मैं लायक सा नालायक हूँ।  
 हे दीनानाथ आज्ञा दीजिए, जल्दी जाने का पास क हूँ।

- विचिन्व्या में रहत हूँ, अंगद है मग नाम  
 तब पितु के उपदेशहित, मोहि पढये श्री राम
- मैं जिसका भोज आता हूँ, वह राजाओं का राजा है।  
 राखते से हूँ प्रणाम करे, ममा तेरे बाप का कर्जा है।  
 मैं उसी वाले का लड़का हूँ। जो आपने कल में रक्ता था,  
 तब क्या है तेरे बाप को भी हा. माह काँख में रखा था  
 करता है वेदुदा गोई, श्री रामचन्द के कासिद से  
 नादान हृदय को, धाम देख, जब पडा है पाल अंगदसे
- ले आये पराई नारी को, बहु रूप बना के चोरी से  
 तारिफ तुम्हारी तब होली, लोले लड़का सह जोरी से  
 अब समय हमारा आता है ठहरो तुमको दिखलाता हूँ।  
 लंका में जल आगकरने जगदम्बा को ले जारा हूँ।  
 हम उसके कासिद हैं, जिसमें पत्थर तैराये पानी में  
 ओह ही प्रलय मचा दी थी, सोरे लंका राजधानी में  
 जिसका इक छेला सा वन्दर, अक्षय कुमार को मार गया था  
 लंका में आग लगाया है, सबका भी शान बिगाड गया  
 के वृका तुम्हारी सुपरिस्वा, जो वही सती थी लंका में  
 बलि हारे हो ममी रीझ गयी, जिसने श्री गुरुकी शोभा में  
 ली ली स्वामी निज दासी को, ले थलो अवध शाही के



तब लखनलाल को धिरे होकर, भेजा न करी बुँची करके

5- रे निशि विहस हार तुम जाकर निश्चय पति से वोल दे  
ठाठे रुक कोपे हार पर चाहत तुमसो भेद है।

6- जीतवानर लोक नामक द्वत अंगद नाम है।

7- वालि के सुत

8- काँवरि दावि जो तुम्हे सागर सात नहाव करवाने

9- वह देख लो क सिधा डियो

10- रघुवीर वाग विमान बेहि सिध सिधा डियो

11- अब हो विभीषण जानिये

12- जग तो हि जीवत को कहै

13- दुर्बुद्धि लोरी जानिये

14- सुनिये दशमाथ हम द्वत रघुनाथ जी के  
हमारे जनक संग करी ते भिताई है।

बड़े कुल नामी जो पुलस्त खानदानी  
शिवविधि सब पूजै बहुमत चित छापी है

किनो सब काज उपाय बढ़कर प्रसाद लेनी

जो है सुरराज को भी जाले वीरताई है

भोगे विस्मय वसुनाथ के बिहाई, जग दग्धा होर लाई  
कहु करी न भलाई है

(पुनः)

सुनिये महाराज ध्यान देकर मैं द्वत राम रघुनाथ का हूँ।

युवराज हूँ वानर देशों का बालक वालिराज का हूँ।

महाराज वालि मे जो तुमसे सच्चा पक्का था दोस्ताना

तुम को कुछ उचित भलगा हूँ, इसलिये मे हुका मे पुरकारा

हो हो सकता है, मादन हो, उस समय आपको कुछ भी

जब रहे वालि की गाँव मे, तब अपना अच्छेतावस्था थी

इसलिये कक्षम मे गला है, महसूस कोरे हे गफलत की

इसमे मुझ को आश्चर्य नहीं, पर रुक जाते है हेवर भी

भगाने श्री सुपुनखा को ले, धरमे नित्य दोक्रे हो

इसलिये अच्छा तो है यह, श्री राम के कोरे मूल है



जान गये श्री राम को, तुम यदि नहीं हो कुछ बतला कहें।  
ले जाओ क्याल जनक पुर को जब अनुप ने इज्जत ले ली थी  
श्री राम राम राजेश्वर हैं, पुरुषोत्तम हैं सुख दायक हैं  
जानर तो कोई चीज नहीं, सुर नर भूमि जिनके पायक हैं।

16- मैं यह सेवा करता परन्तु मुझे इतनी मोहता नहीं  
मैं वहाँ आपका सेनापति, यह कहें और निश्चय कहें  
सेनापति को यदि जरूरत हो तो रामादल में फाजिल है  
ये चार नहीं मैं कहें वहाँ सेनापति बनने काबिल है।  
पर शासक ही स्वीकार करें, कोई इस गलतले गहने को  
नीयों सुगई जाय जहाँ ऐसे मकान पर रहने को  
अलवता रूख विभीषण हो, इस सेवा को आ सकते हैं।  
सेवा ही क्या-चाहो तो वह राज चला भी सकता है।  
पर उसका भी रूख संदेश है, इस लंका पति रावण के लिये  
रह जायेगा रूख विभीषण हो सादे कुल के दर्पण के लिये  
इस लिये होइम वर भाव, अपना उपजवल दर्पण करिये  
रघुनाथ से लिये सन्धि, सीता उनके करण को दे

17- वस यह हो है या और भी है, यह सब शेर भागूली है।  
मैं जानूँ उसे कह दूँगा, सब कोट भागूली है।  
जिन हाथों से पुल बाँधा वे ऊँचे तोड़ भी देंगे  
और विभीषण काफ़ी है, आपको भी यहाँ पढ़ायेगे  
जितनी भी हमें यों दुई आवतक वह सब पूरी होवेगी  
जब-2 महलों में जावेंगे, तब-2 नजों में आवेंगी  
श्री सुपेनखा की कही बात, किस तरह से जोड़ी जावेगी

18- है महाराज फिर कहना क्या, मुझको तो तुमने सुना दिया  
क्या उस छोटे से बन्दर ने, सचमुच लंका को जला दिया  
उसमें तो बल का नाम नहीं, वह तो जासूसी करता था  
वह भाग दौड़ में आवतक था, और सुब रास्ता चला था  
सुग्रीव ने चले समय उसे, यह चार काम बतलाए थे  
पहले ही जाते लंका में, श्री सीता मां की सुधि लेना



दूसरे तो इंसानों को, सागर में डाय वहा देना  
 तीसरे जानकी माता को, श्री राधेदेव के दिग लगाना  
 चौथे में वाँध कर रावण को साथ ही साथ लेते आना  
 असलियत आज मालूम हुई कुछ काम न उड़ कर पाया है।  
 इसलिये वहाँ पहुँचा ही नहीं, ओं छुट गी नहीं फिरवाया है।  
 पला नहीं वह कहीं गया ओं रह गया है, जिस युद्ध समल  
 जो तुम्हें स्वतन्त्र है राजन, वह है ही नहीं राका दल में

19- च-य-२ है आपकी जादुगर महाराज  
 स्वयं वडाई मारते ओं तुझे न लाज  
 जो करो वाने होले है, ते करते है। कहते हो न ही  
 यह मसाल आप भी जानते है। जो गर्जे है। वर्ष ही नहीं  
 श्री गान कभी पाताल गये श्री काल राजा को जीवन को  
 तब छोटे-२ वच्चे ने भेरा था, सब यो द्वा पन को  
 जब छुड सले में वाँधा था ओं अच्छी तरह सताया था  
 तब दसा आ गयी थी, वानि से ओं जाकर तुम्हें दुःखा था  
 असोज सहस्त्रावतुने सब अशा निरकिरी कर दी थी  
 ले जाओ रुखाल जमक पुर में जब धनुष ने डज्जल ले ली थी  
 तुम कर-२ सह करते हो मैं वडा इस ओं को भी हूँ।  
 वलिहारी हो सह भी ले कहे श्री वलि कौरव का के दो हूँ।

20- सोई दोना ओं सोई होगी, सैनिक वलिदान न हो हो  
 सब ओं शांति का राज रहे, सगडे नुस्सान नहीं हो  
 पर रणचण्डी सोई चोर उरी ले, पूरणी शोफिमम होगी  
 जब ओं पराजय फिर होगी पहेले हो महा प्रलय होगी  
 वच्चे-२ लावरीस हो, ओं रते राड़ हो जायेगी  
 कानों वच्चे को माता का मालम को हराय मचायेगी

21- ओं तो मुझ को हो गया शूली का ओं दे श  
 तेम्ही तेम्ही  
 तो जी का जी खेलकर कह हूँ सब सन्देहा  
 तो वेव रूप ओं के दीवाने हूँ किस घमंड में फूला है  
 दुनिया में नर है इस तरह, जल पर जिस तरह वबुला है  
 मैं अपनी श्रेणी में हूँ, दुनिया को मैंने जीटा है।



इस मसले को जानता नहीं, जुल्मी थोड़े दिन जीता है।  
जब मरेस को दिन आते हैं। तब आयु-मृत रह जाती है।  
तब बुद्धि निपर उल्टी होकर मद के जल में बह जाती है।  
पापों ने अन्धा किया तुझे अन्तिम दिन आने वाला है।  
ये चार श्रेण में २० शरण, तू दुनिया से जाते वाला है।

22- जो सेवक अपने स्वामी को बुराई आपन बानों से सुनता है।  
उसे गो हत्था के बराबर पाप लगता है।

इसलिये २० शरण शम्बर दार

23- ये झूठे नारि व चोर मुखी, क्या तुझे नहीं <sup>गुरु शम्बर</sup> ~~क्या तुझे नहीं~~ हुआ  
कोई भी हकीकत तुला काई, यदि तुझे नहीं ~~आता~~ हुआ  
आपने आँखों वल देख लिया, श्री राम-चन्द्र के माहिद का  
जिसके सेवक में यह जिद है, वह स्वामी कितने दूर का  
लोक एक बर्फ गुल्म का है। जिसमें निश्चर बसे है।  
कन्देरी में यह आदत है, फल स्वाच्छ पेड़ तोड़ते हैं।

24- अनजान जानकी जानकी-ह, जानकी जानकी साक्षी है।  
दे जानकी जानकी खैर है तब, नीचे जानकी जानकी व्यासी है।  
तू अवला को कल पोयेगा, तो कभी नहीं कल पोयेगा  
जुल्मी इन जुल्मों का बदला, यदि आज नहीं कल पोयेगा  
निश्चरों का गुण तो भला है। यह तेरी शेरनी ओढ़ता है।  
ले रहा हूँ, आज परीक्षा में देखूँ इनमें कितना बल है।

(पाँव जमाना)

यह पाँव मेरा पृथ्वी पर से, तिल भर कोई ताल गंगा  
तो राम-चन्द्र जी जायेंगे, मैं सीराजी को हार गया।

25- हठिरे बर दूत के पाँव न पड़, क्या अपनी शान गवाराई  
व्यो नहीं धकेल पड़ता राम-चरण, उसमें क्या लज्जा स्वाहा  
मे तो सेवक हूँ माहिद हूँ, मेरे वधा का सखा हूँ।  
मे तो आकाश पालक हूँ। क्या आज नहीं कर रहा हूँ।



50

रे जानो कोई शीघ्र जानो कुछ इस वीरह ले भोव  
रावण पर प्रेह सागर हुका जल्दी कोइ जल्दी कोइ सा वृद्धा को

26- कच्छा महाराज नाराज न हो, मैं रामा दल को आता हूँ।  
आराम प्राप्ति मही है, वस चले-2 समझाता हूँ।  
यदि रघुनाथ से साधे दुःख, तो जीते जी लरागे तुम  
नही महाराज इस दुनिया में, वे आई मौत भरोगे तुम